परिशिष्ट 1

साक्षात्कार

डॉ0 कुमाल कुमार के साथ दिनांक 23.10.2023 को लिया गया साक्षात्कार-

कमल कुमार हिन्दी साहित्य की एक ऐसी प्रसिद्ध लेखिका हैं जो किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उनकी समस्त रचनाओं को पढ़ने के उपरांत उनसे बात करने की जिज्ञासा बलवती हो उठी। मैं उनसे मिलना तो बहुत चाहती थी किन्तु नौकरी में होने के कारण उनसे मिलना संभव नहीं हो सका। किन्तु उनसे बात करने की इच्छा बहुत थी जिसको मैंने अपने शोध निर्देशक प्रो0 सूर्यकांत त्रिपाठी के सामने प्रकट की तो उन्होंने फोन पर ही साक्षात्कार लेने के लिए सहर्ष ही आज्ञा दे दी। तदुपरांत मैंने लेखिका से फोन पर बात की और साक्षात्कार लेने के लिए उनसे अनुमति मांगी। उन्होंने ने भी इसे सहर्ष स्वीकार किया और 23.10.2023 दिन सोमवार को दोपहर 2:00 बजे का समय दिया।

लेखिका से साक्षात्कार लेते समय निम्नलिखित वार्तालाप हुई जो इस प्रकार है -

प्रश्न - आपने लेखन कार्य की शुरूआत कब की ?

उत्तर - लेखन कार्य की शुरूआत कॉलेज में दाखिला लेते-लेते कर दिया था।

मैं बचपन से ही स्कूल स्तर पर और कॉलेज स्तर पर होने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया करती थी। कॉलेज की पत्रिका की छात्रा सम्पादिका भी रही। कॉलेज और इंटर कॉलेज के जितने भी प्रतियोगिताएँ होती थीं उसमें कॉलेज की तरफ से जाया करती थी और सबके आशानुरूप पुरस्कार लेकर आया करती थी। मैं विशेष रूप से साहित्यिक आयोजनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। कहानी, निबंध, कविता व वाद-विवाद आद में भाग लिया करती थी।

प्रश्न - हिन्दी साहित्य में रूझान कैसे और कब हुआ ?

उत्तर - रूझान तो बचपन से था। बी.ए. अर्थशास्त्र में किया किन्तु हिन्दी साहित्य में रूझान होने के कारण एम.ए. अर्थशास्त्र में न करके हिन्दी साहित्य में किया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य में अग्रसर हुयी फिर मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हिन्दी साहित्य में ही मैंने अपना लेखन कार्य आगे बढ़ाया। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में मेरे लेख भी छपते रहे।

प्रश्न - आपकी प्रथम रचना का प्रकाशन कब हुआ ?

उत्तर - सन् 1963 में 'नवभारत टाइम्स' में 'तीन देवियां' कहानी प्रकाशित हुई जो मेरी पहली रचना थी। इसमें पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली तीन औरतों की कहानी है। जिसमें स्त्री का पीढ़ी-दर-पीढ़ी होने वाले शोषण को दिखाया गया है। इस कहानी में पहले माँ सहती है, फिर उसकी बेटी

सहती है और फिर उसकी बेटी सहने के लिए मजबूर होती है, किन्तु यह बेटी विरोध करती है। शुरू से ही स्त्री को देवी कहकर यह समाज उसका शोषण करता आया है। जिस प्रकार एक देवी को भूख-प्यास नहीं लगती ठीक उसी प्रकार स्त्री को भी समझ लिया जाता है कि इसको भूख-प्यास नहीं लगती, इसका बस शोषण करते रहो। सभी परम्परा, नियम, कायदे-कानून, धर्म सब स्त्रियों के लिए है इनके नाम पर उन्हें सिर्फ और सिर्फ बंधन में जकड़ा जाता रहा है। ऐसे समाज के लोगों को सोचने और दिमाग चलाने वाली औरत नहीं चाहिए उन्हें चाहिए एक मूर्ति जो सब देखे और सुने किन्तु बोले कुछ नहीं।

टी.वी. चैनलों पर औरत को लेकर जो देवी रूप में श्रद्धा दिखाई जाती है और उसका शोषण किया जाता है मेरा बस चले तो मैं उसे बन्द कर दूँ।

प्रश्न - 'पासवर्ड' उपन्यास का शीर्षक 'पासवर्ड' क्यों रखा ? इसके पीछे कुछ विशेष उद्देश्य।

उत्तर - यह 'पासवर्ड' फॉर्म में लिखा गया है इसलिए इसका शीर्षक पासवर्ड रखा।

प्रश्न - आपके लेखन कार्य के प्रेरणा स्रोत कौन रहे ?

उत्तर - लेखन कार्य के लिए प्रेरणा आन्तरिक मन के रूझान से आयी। बचपन से ही लेखन कार्य के प्रति रूचि रही है। यदि मैं अप्रत्यक्ष रूप से

पारिवारिक दृष्टि से जाऊँ तो मेरे पिता ने मुझे जीवन में बहुत प्रेरणा दी है। उन्होंने मुझसे सदैव यह बात कही है कि चाहे जो भी परिस्थितियाँ हों अपने जीवन में कभी हार मत मानना। वो कहते थे मेरी बेटियां पढ़े-लिखे और अपने पैरों पर खड़ी हो, स्वालम्बी बनें और अपनी सोचें। मेरी एक बहन डॉक्टर है, दूसरी इंजीनियर है। मेरे से वे थोड़े निराश हैं। उनका मानना था कि कमल तुम पढ़ने में अच्छी हो तुम I.A.S. की तैयारी करो। मैंने भी बोल दिया मैं न तो I.A.S. बनूंगी और न ही अर्थशास्त्र में पढ़ाई करूंगी। मेरी रूचि साहित्य में है तो मैं हिन्दी में एम.ए. करूंगी।

मैं बचपन से ही बहुत पढ़ती थी और शायद यही मेरी प्रेरणा रही। मेरे पिता हिन्दी उपन्यासों को पढ़ने के विरोधी थे। वो कहा करते थे तुम टैगोर पढ़ो और मुझे टैगोर में कोई रूचि नहीं थी। मुझे जो भी जैसे कुश्वाहाकान्त, गुलशन नंदा, चंद्रकांता मिलता था मैं उठा लेती और उनको ही पढ़ा करती थी वो भी छिपकर। उन सबको पढ़कर आज मुझे लगता है कि मुझे बहुत फायदा मिला है। इसमें एक विशेष तरह की कल्पना है।

गुलशन नंदा के उपन्यास पर तो 'कटी पतंग' फिल्म भी बनी। वो एक सहज सामाजिक चेतना के लेखक हैं। I have gone through all that फिर अलग बात है कि बाद में मैंने सबको पढ़ा। लेकिन आज भी मैं यह बात मानती हूँ कि मेरे अंदर जो लिखने-पढने की नींव रखी गयी वो उन्हीं लोगों द्वारा रखी गयी।

पिता से उपन्यासों व उपन्यासकारों कुश्वाहाकांत, गुलशन नंदा आदि से भी एक प्रकार की अलग ही प्रेरणा मिली। बाकी जो मेरे प्रत्यक्ष रूप में रहे जैसे- अज्ञेय जी, कमलेश्वर इन सबसे प्रेरणा मिलती रही।

प्रश्न - आपके देश-विदेश के भ्रमण का लेखन साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - हर देश की अपनी एक दृष्टि होती है, संस्कृति होती, सभ्यता होती है। मेरे लेखन में भी इनका छुट-पुट अंश देखने को मिलता है। मेरा उपन्यास है 'हैमबर्गर' उसमें आप देखेंगे कि कैसे वो छोटे से पंजाब से आई एक लड़की की पैराडाइम शिफ्ट की कहानी है। इस उपन्यास में रतीन्द्र की पूरी कहानी है। उसके विकास की कहानी है। मैंने जो अमेरिका का वर्णन किया है वहां मैं गई भी हूँ, वहाँ रही हूँ, वहां की संस्कृति को देखा भी है। जब हम बाहर जाते है तो जिंदगी को और भी अलग-अलग तरीके से देखते हैं। जरूरी नहीं कि वह जिन्दगी ही बेहतर हो हम उसकी तुलना भी कर सकते है। जैसे- 'पासवर्ड' उपन्यास में बहुत से विदेशी किताबों के उद्धरण दिए हैं वह सिर्फ कहने भर के लिए नहीं है बल्कि वह उपन्यास का जरूरी हिस्सा है।

प्रश्न - पुरूषों की स्त्रियों के प्रति कैसी मानसिकता है इसको आप अपनी रचनाओं में किस प्रकार देखती हैं ?

उत्तर - पुरूषों की स्त्रियों के प्रति जो सोच है वह शुरू से ही रूढ़िवादी है। वह स्त्रियों को सम्मान देने की बात तो करते हैं किन्तु जमीनी स्तर पर

देखा जाए तो वह बस कहते ही हैं करते बिल्कुल भी नहीं। उन्होंने सदा ही स्त्री को भोग की वस्तु समझा है। औरतों के ऊपर दो तरह की हिंसा होती है, एक तो उनको शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर दृश्यात्मक रूप में तो दूसरी मानसिक रूप से प्रताड़ित कर अदृश्यात्मक रूप में हिंसा।

उपर्युक्त सभी प्रश्नोत्तर के माध्यम से कमल कुमार के साथ साक्षात्कार सम्पन्न हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

आधार पुस्तकें :

कहानी संग्रह :

1- कुमार कमल, अन्तर्यात्रा, उ0 प्र0 : रेमाधव पब्लिकेशन्स प्रा0लि0.

2- कुमार कमल, 2015, कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।

3- कुमार कमल, 1996, क्रमश :, नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ।

4- कुमार कमल, 2007, घर-बेघर, नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स।

5- कुमार कमल, 1954, पहचान, नयी दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

6- कुमार कमल, 1998, फिर वहीं से शुरू, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन।

7- कुमार कमल, 2007, वैलेन्टाइन डे, दिल्ली : कीन बुक्स।

उपन्यास

1- कुमार कमल, 1968, अपार्थ, नयी दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

2- कुमार कमल, 1992, आवर्तन, नयी दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

3- कुमार कमल, 2010, पासवर्ड, नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन।

4- कुमार कमल, 2010, मैं घूमर नाचूँ, दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्स।

5- कुमार कमल, 2000, यह खबर नहीं, दिल्ली : अखिल भारती।

6- कुमार कमल, 1996, हैमरबरगर, नई दिल्ली : हिन्दी बुक सेन्टर।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1- अग्रवाल, भगवत शरण : 1995, साहित्य और समीक्षा पाश्र्व प्रकाशन, अहमदाबाद।

2- पाण्डे मैनेजर : 1989, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।

3- मिश्र शिवकुमार : 1977, साहित्य और सामाजिक संदर्भ।

4- उपाध्याय रमेश : 1999, कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा।

5- सिंह नामवर : 1962, इतिहास और आलोचना।

6- गुप्ता विश्वम्भर दयाल : 1982, साहित्य का समाजशास्त्र : अवधारणा, सिद्धांत एवं पद्धति, सीता प्रकाशन, हाथरस।

7- हरिकृष्णरावत सम्पा0 : 1986, समाजशास्त्रत्र कोश अवधारणाएं, (प्रथम खण्ड) रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

अंग्रेजी पुस्तकें :

8- Abraham M. Francis : 2006, Contenmporary Sociology, An Introduction to concepts and theories, Oxford University Press, New Delhi.
9- Marshall Gordon (editor) : 2005, Oxford dictionary of Sociology, Oxford University Press, New York.

हिन्दी पुस्तकें

1- वर्मा श्याम बहादुर : प्रभात बृहत, हिन्दी शब्दकोश, भाग दो, प्रभात प्रकाशन प्रथम संस्करण, दिल्ली.
2- प्रसाद कालिका (सम्पा0) : बृहत हिन्दी कोश, गगन मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, चौथा संस्करण.
3- नगेन्द्र (सम्पा0) : 1982, मानविकी पारिभाषिक कोश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4- नगेन्द्र : 1982, साहित्य का समाज, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5- शर्मा शिवपूजन : 2012, फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अनुशीलन, मनीषा प्रकाशन वाराणसी।
6- दास डॉ0 श्यामसुन्दर : 2017, साहित्यालोचन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7- ए अरविन्दाक्षन : 2007, कविता की धरती पक्षधर (संकलन-2)।
8- जैन नेमिचन्द्र (सम्पा0) : 1980, मुक्तिबोध रचनावली-4।

9- कुमार राजेन्द्र : 2015, यथार्थ और कथार्थ, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद।

10- पाण्डेय मैनेजर : 2005, आलोचना की सामाजिकता।

11- त्रिपाठी प्रशान्त : 1985, विल्फ्रेडो परेटो एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, समाजशास्त्र कानपुर।

12- हुसैन मुजतबा : 2010 समाजशास्त्रीय विचार, ओरियंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

13- त्रिपाठी चित्रा : 1985, इमिल दुरखाइम : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, समाजशास्त्र संसद, कानपुर।

14- सांकृत्यायन राहुल : 1977, कार्ल मार्क्स, किताब महल।

15- मिश्र शिवकुमार : 1973 मार्क्सवादी साहित्य-चिन्तन : इतिहास तथा सिद्धांत, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

16- स्टीवर्ट एलवर्ट, डब्ल्यू, : 1978, सोशियोलॉजी द ह्यूमन साईंस, एम सी ग्रॉ हिल बुक कम्पनी।

17- मुकर्जी डी. पी. : 1955, इंडियन ट्रेडिशन एण्ड सोशल चेंज, पॉपुलर प्रकाशन मुबंई।

18- मिश्र शिवकुमार : 1975, यथार्थवाद, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लि. दिल्ली।

19- कुमार कमल : 2017, जो कहूँगी सच कहूँगी, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।

20- कुमार कमल : 1998, फिर वहीं से शुरु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।

21- कुमार कमल : 2007, घर-बेघर, पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स, नई दिल्ली।

22- कुमार कमल : 1996, क्रमश: भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

23- कुमार कमल : 2010, पासवर्ड, नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन।

24- कुमार कमल : 2010, मैं घूमर नाँचू, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स।

25- कुमार कमल : 2007, वैलेन्टाइन डे, दिल्ली, कीन बुक्स।

26- कुमार कमल : 1996, हैमबरगर, नई दिल्ली : हिन्दी बुक सेन्टर।

27- कुमार कमल : 1992, आवर्तन, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

28- शर्मा, डॉ0 राजपाल : हिन्दी वीरकाव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति।

29- कुमार कमल : 2000, यह खबर नहीं, दिल्ली, अखिल भारती।

30- वर्मा महेन्द्र कुमार : 1969, भारतीय संस्कृति के मूलाधार, प्रत्युष प्रकाशन, कानपुर।

31- कुमार कमल : 1984, पहचान, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

32- कुमार कमल : 2015, कमल कुमार की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

33- वर्मा डॉ0 दीपक : 2022, भारत में मानवाधिकार।

34- कुमार कमल : 2008, अन्तर्यात्रा, उ0 प्र0 : रेमाधव पब्लिशिंग प्रा0 लि0।

35- सिंह बच्चन : 2015, आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द।

36- श्रीवास्तव परमानन्द : स्त्री मुक्ति के तार्थ।

37- सहाबुद्ध विमल : हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण।

38- विजयावारद : साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ।

39- वर्मा महादेवी : 1942, श्रृंखला की कड़ियाँ।

40- कुमार कमल : यादगारी कहानियाँ।

41- गुप्ता आभा : नवम् दशक की हिन्दी महिला कथाकरी की नारी चेतना।

42- यशपाल : 2006, बात-बात में बात।

43- सिंह अमित कुमार : 2012, भूमण्डलीकरण और भारत : परिदृश्य और विकल्प।

44- सिंह संदीप : 2012, भारत में दलित आंदोलन

इंटरनेट वेबसाइट

1. www.google.co.in
2. www.hi.wikipedia.org
3. www.vivacepanouma.com

पत्रिका

1- पुनश्च, दिनेश द्विवेदी (संपा0), होशंगाबा, मंथन पब्लिकेशन, जनवरी-अप्ैरल, 2006, अंक-17.

(शोध कार्य के दौरान शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध-आलेख)

1- गुप्ता, रेखा, (2023), कमल कुमार की कहानियों में सामाजिक समस्या, जुलाई/अगस्त 2023 द्विभाषी राष्ट्रसेवक ISSN 2321-4945 UGC care listed Journal.

2- गुप्ता, रेखा, (2023), अपनों के बीच, अपने ही पराये, जुलाई/सितम्बर 2023, संकल्य, त्रैमासिक पत्रिका, ISSN 2277-9264 UGC care listed Journal.

(राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र)

- सामाजिक सशक्तिकरण बहुद्देशीय संस्था वर्धा, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी, महिला सशक्तिकरण : मिथक, इतिहास और यथार्थ में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "कमल कुमार के कथा साहित्य में महिला सशक्तिकरण" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुति।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Rekha Gupta
Title	Samajshastriya Nikash Per Kamal Kumar Ke Katha Sashitya Ka Anusheelan
Paper/Submission ID	1147440
Submission Date	2023-11-30 15:47:42
Document type	Thesis

Result Information

Similarity	**8%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

8	7	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	3	Publication
2	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	3	Publication
3	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	1	Publication
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	1	Publication
5	Paper Submitted to Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi	<1	Student Paper
6	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
7	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication